प्रेम विहारी 'अजमेरी' कृत

प्रेम प्रवाह

रवीन्द्र नाथ टैगोर रचित

चित्रांगदा एवं स्मरन

प्रतिनिधि अनुवाद एवं विवेचनाएँ

सम्पादक :

पं. विद्यासागर शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

ISBN - 81 - 88956 - 13 - 9

प्रकाशक	*	प्रेम-प्रकाशन, सन्त-सदन, चिरगाँव (झाँसी) उ0प्र0
शाखा कार्यालय	*	अनुपम-सदन, प्रेम नगर-बालाघाट (म0प्र0)
प्रबन्धक	*	सुश्री शोभा शर्मा सन्त सदन, चिरगाँव (झाँसी) उ0प्र0
सर्वाधिकार	*	प्रकाशकाधीन
आवरण सज्जा	*	गोपाल भार्गव, इलाहाबाद
छायाचित्र	*	मधुकर शर्मा अनुपम स्टूडियो, प्रेमनगर - बालाघाट (म0प्र0)
अक्षर संयोजन	*	सर्वेश प्रकाशन 1 बाई का बाग, इलाहाबाद
मुद्रक	*	भार्गव आफसेट 2 बाई का बाग, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण	*	2007
मूल्य	*	रु0 150-00 (एक सौ पचास रुपये)

प्रेम प्रकाशन, सन्त-सदन, चिरगाँव
(झाँसी) उ0प्र0 के लिए
वितरक

अल्पना प्रकाशन

180/28ए पुराना अल्लापुर
इलाहाबाद-211006

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1. समर्पण	सम्पादक	8
2. निवेदन	पं0 विद्यासागर शर्मा बालाघाट (म.प्र.)	11
3. कवि-परिचय	सम्पादक	21
4. अभिमत		25
	मोहनदास करमचंद गांधी	25
	सम्पूर्णानन्द	25
	वीरसिंह देव, टीकमगढ़	25
	मैथिलीशरण गुप्त	25
	रायकृष्ण दास	26
	वियोगी हरि	26
	पं0 नरेन्द्र शर्मा	27
	डॉ0 रामकुमार वर्मा	27
	धर्मवीर भारती	27
	रामेश्वर दयाल दुबे	28
	पं0 रामनारायण जोशी	28
5. भूमिका	डॉ0 श्री किशोरीलाल, नैनी-इलाहाबाद	29
6. श्रद्धाञ्जली	श्री ऊर्मिलाचरण गुप्त, चिरगाँव	37
7. श्रद्धास्मरण	पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी	38
मनीषी विवेचनाएँ :		39-75
7. विहंगम दृष्टि	पद्मभूषण डॉ0 वृन्दावनलाल वर्मा, झाँसी	41
8. भाषानुवादक के मौलिक प्रतिमान	पं0 श्री श्यामनारायण 'कश्मीरी', नागपुर	47
9. विनीत प्रणति	श्री बालकवि बैरागी, नीमच (म. प्र.)	55
10. भावों का छलकता हुआ उदधि उछाह 'प्रेम-प्रवाह'	श्रीमती वाणी 'रत्नाकर' शर्मा, बैंगलोर	65
प्रतिनिधि अनुवाद : मूल लेखक - गुरुदेव श्री रविन्द्र नाथ टैगोर		77-165
11. चित्रांगदा	अनुवादक - प्रेमविहारी 'अजमेरी'	79
12. स्मरन	अनुवादक - प्रेमविहारी 'अजमेरी'	133

(सहधर्मिणी श्रीमती मृणालिनी देवी के स्वर्गवास पर पुण्य स्मरण)

*

पुण्यश्लोक

(राष्ट्रकवि डॉ. मैथिलीशरण गुप्त)

श्री मैथिलीशरण गुप्त

•

हमारे जीवन के सुख के उद्योगी और दुःख के भोगी भाई 'अजमेरी' की साधारण बातचीत में ही मुझे कविता का आनंद मिल जाता है, फिर उनकी कविता का कहना ही क्या ? ग्रीष्म, वर्षा और शीतकाल की न जाने कितनी रातें की रातें उनके आलाप के प्रवाह में कब और कहाँ बह गईं। भगवान् ने उनकी वाणी में कवित्व के साथ – साथ स्वर का भी मणिकाञ्चन संयोग कर दिया है और इसके ऊपर उनमें अनुकरण शक्ति देकर मानों उसे पूर्णता से भी कुछ आगे पहुँचा दिया है। बात करते करते छन्द बना लेना उनके लिए साधारण बात है। परन्तु अपने कवित्व की ओर कभी उन्होनें ध्यान नहीं दिया। दूसरों की कृतियों का ही आनन्द वे उदार भाव से लेते और देते रहे हैं। तथापि उनकी कवित्व शक्ति ऐसी नहीं है कि उसका उपयोग न किया जाए। सियारामशरण की निरंतर प्रेरणाओं ने उन्हें मौज में लेटे न रहने दिया और वे 'राम जी, बड़ा कष्ट दिया' कह कर कुछ लिखने को बाध्य हुए .... और मुझे भी उनसे 'पर–दुःख में परिहास है' सुनने का एक और अवसर मिल जाता –।

'गीत–कवित्त' उनकी पैतृक धरोहर है, परन्तु प्रतिभा तो प्रभु की अमूल्य देन है। वह व्यष्टिगत ही होती है, तथापि उसकी सृष्टि में समष्टि का भाग होता है। अतएव उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग करके हमारा प्राप्य ही हमें दिया है। वे बड़ी सुन्दर – सुन्दर ऐतिहासिक और काल्पनिक कथा – कहानियाँ भी कहते हैं, इस कथकता के कारण ही वर्णन की साङ्गोपाङ्गता उनकी एक विशेषता रही है।

चिरगाँव (झाँसी)

अनन्त चतुर्दशी, १९८९ वि.

मैथिलीशरण